श्री राम चन्द्र मिशन

एकोज़ इंडिया

नवम्बर २००९ | केवल निजी वितरण के लिये | भाग २,अंक ६

प्रिय भाइयों और बहनों,
प्रणाम।

हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि एकोज़ इन्डिया की सदस्यता और संचारण बढ़ रहा है। हमें इस अंक के लिये ज्यादातर ज़ोन से अनेकों लेख मिलें हैं। जुलाई 2009 में तिरुपुर में हुई एकोज़ इन्डिया के स्वयंसेवको की बैठक के बाद, हमारे लेखों की गुणवत्ता और संचारण में भी सुधार आया है। जगह की कमी के कारण लेखों का चयन करना हमारे लिये बहुत ही मुश्किल काम रहा है।

इस अंक में गुरुदेव का आंध्रप्रदेश, उत्तर कर्नाटक और पश्चिम बंगाल का दौरा शामिल है। कोलकाता के पास स्थित खड़गपुर में दूसरे क्रेस्ट का उद्घाटन इस दौरे की मुख्य झलकियां हैं।

चेन्नई में, मणपाक्कम आश्रम दिवाली के लिये अनेक प्रकार की गतिविधियों से गूंज रहा था।

हमने इस अंक में, विभिन्न ज़ोन में आयोजित अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रम व जनसभा सत्रों, बंगलोर में हुए युवा कार्यक्रम, क्षेत्रीय सभाओं, जयपुर और एरनाकुलम में आयोजित वी बी एस ई कार्यक्रम और उत्तराखंड में हुई प्रशिक्षक मीटिंग को भी शामिल किया है। 'प्रकाश के केन्द्र' अनुभाग में मुम्बई के पनवेल आश्रम को रूपांकित किया गया है।

जिनके पास इस समाचार–पत्र को उपलब्ध करने की सुविधा नही है उन्हें इस अंक का अवश्य संचारण करें व अपने परिवार व आसपास के दूसरे भाइयों व बहनों को जरूर से पढ़कर सुनायें।

आदर सहित
सम्पादकीय दल

चित्तूर

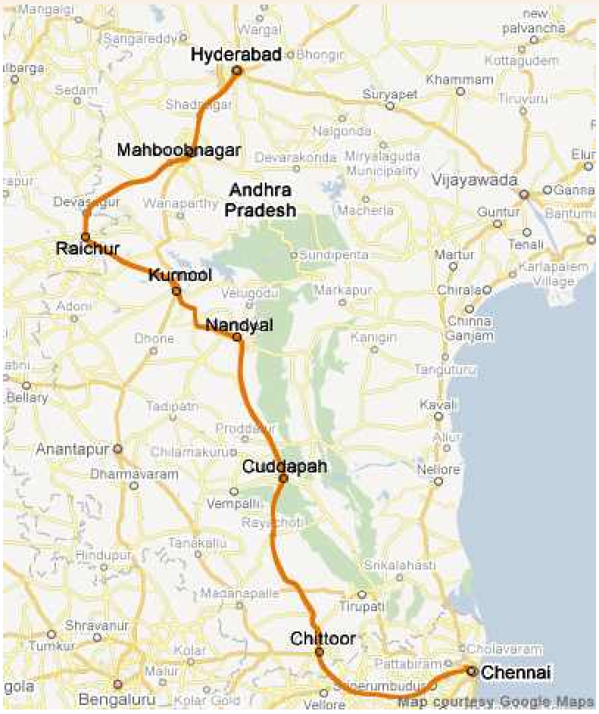

गुरुदेव ने चेन्नई से रविवार, 13 सितम्बर की दोपहर को, भाई अजय भट्टर के साथ आंध्रप्रदेश व उत्तर कर्नाटक के दौरे पर सड़क–मार्ग द्वारा प्रस्थान किया।

चित्तूर आश्रम में एक हजार से भी ज्यादा अभ्यासियों ने गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। लगभग 3 घंटे की यात्रा के बाद भी गुरुदेव खुश व प्रसन्नचित्त दिख रहे थे। उनके आते ही वहाँ हल्की बूंदाबांदी हुई जिसके कारण आश्रम का वातावरण और भी रम्य हो गया। गुरुदेव ने अपनी काँटेज के बाहर शाम के पाँच बजे सतसंग करवाया तथा बताया कि अगले दिन तीन सतसंग होंगे एक सुबह 7:30 बजे, 11:30 बजे व शाम को 5:00 बजे। आने वाली सभी जगहों पर (सतसंग की) यही दिनचर्या बनी रही।

14 सितम्बर की सुबह गुरुदेव ने सभी

उपस्थित लोगों को एक अनौपचारिक सत्र का अवसर प्रदान कर उन्हें आनन्द से भर दिया। उन्होंने कहा कि "आध्यात्मिकता में कोई भविष्य नही है। हम, जैसा हमें होना चाहियें, ऐसी कामना करते हुए, अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।....यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि लोग स्थूल स्तर पर विकसित होने का प्रयास करते हैं जहाँ सम्भावनाएं बहुत ही सीमित होती हैं। आध्यात्मिक स्तर पर सम्भावनायें असीमित हैं... हमें चीजों को सही तरीके से समझना चाहियें। ध्यान के द्वारा अनुशासन उत्पन्न होता है। सफाई की प्रक्रिया हमें तैयार करती है। प्राणाहुति, अध्यात्मिकता में आगे बढ़ने में हमारी मदद करती है। प्रशिक्षकों को इस सबके बारे में बात करनी चाहियें। वे कभी–कभार करते हैं।"

गुरुदेव रात के खाने के बाद 8.45 पर बाहर आये, उन सब को हर्षोल्लासित करते हुए, जो लोग शान्त भाव से कॉटेज के बाहर उनका इन्तजार कर रहे थे। तब उन्होंने करीब आधे घंटे तक अभ्यासियों के साथ समय बिताते हुए स्वयं के पुनर्मूल्यांकन तथा भविष्य की और अग्रसर होने के लिये अपने आप को योग्य बनाने की आवश्यकता के बारे में कहा।
(http://www.sahajmarg.org/literature/online/speeches/reappraise-yourself). 15 सितम्बर को गुरुदेव ने कड़प्पा के लिये प्रस्थान किया।

वह करीब दोपहर के समय कड़प्पा आश्रम पहुँचे। वहाँ लगभग 1500 अभ्यासियों ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। नवनिर्मित ध्यानकक्ष, (3 एकड़, 30 सेंट्स) जिसकी क्षमता 1000 से ऊपर की हैं, को बहुत खूबसूरती से सजाया गया था, तथा वह आश्रम के परिसर पर बहुत ही सुन्दर दिख रहा था। गुरुदेव ने आने के बाद ध्यानकक्ष का उद्घाटन किया और 4:30 बजे सतसंग कराया। जब कुछ अभ्यासी अपने बच्चों के नामकरण के लिये उनके पास गये तब गुरुदेव ने कहा कि वह तभी नामकरण करेंगे जब उन्हें आश्वस्त किया जायेगा कि वे लोग बच्चों के नाम के आगे उपनाम नही जोड़ेंगे।

16 सितम्बर को गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित स्वयं सेवकों के दल को आशीर्वाद दिया जिन्होंने इस छोटे से केन्द्र में सराहनीय काम किया है। उसके बाद उन्होंने नन्दयाल की ओर प्रस्थान किया।

श्री राम चन्द्र मिशन

एकोज़ इंडिया

मालिक का दौरा

नवम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ६

NANDYAL

KURNOOL

उनका स्वागत किया। गुरुदेव की कॉटेज तक जाने के मार्ग के किनारे फूलों से सुसज्जित पौधों की पंक्तियां लगी थीं। गुरुदेव ने पहले अपनी कॉटेज का उद्घाटन किया तथा उसके बाद पास में लगे हुये ध्यानकक्ष की तरफ गये और रिबन काटकर उसका उद्घाटन किया। अगले दिन 17 सितम्बर को गुरुदेव, एक अभ्यासी परिवार द्वारा चलाये गये एक शिक्षण संस्थान गये। अगला पड़ाव नन्दयाल से 90 मिनट की दूरी पर स्थित करनूल था।

गुरुदेव 11.20 पर करनूल पहुँचे। आते ही सबसे पहले उन्होंने ध्यानकक्ष को बाबूजी महाराज को समर्पित करते हुए उसका उद्घाटन किया। उसके बाद सतसंग हुआ जिसमें 1600 से भी ज्यादा अभ्यासियों ने भाग लिया। तत्पश्चात उन्होंने अपनी कॉटेज का उद्घाटन किया जोकि ध्यानकक्ष के ढाँचें का ही एक हिस्सा है। कॉटेज जाते समय किसी ने टिपण्णी की कि यह आश्रम बहुत अच्छा है। गुरुदेव ने उत्तर में कहा कि उनके सभी आश्रम अच्छे हैं। अच्छे आश्रम कोई भी बना सकता है परन्तु वह अच्छे अभ्यासी देखना चाहते हैं।

गुरुदेव शाम के समय बाहर आये और अपनी कॉटेज के बाहर बैठकर अभ्यासियों के साथ समय बिताया।

- उन्होंने कहा कि उनकी उम्र में लोगों को आराम की जरूरत होती है जैसे कि एक बच्चे को आराम की जरूरत होती है। महाभारत से धृतराष्ट्र के शब्दों को लेते हुए गुरुदेव ने कहा कि जब हम चाहते हैं तब नींद नहीं आती –जब यह आती है तब हमें सोना पड़ता है।
- गुरुदेव ने टिपण्णी की कि 5000 अभ्यासियों के समूह में 50 बुरे अभ्यासी माहौल को खराब करने के लिये पर्याप्त है। उन्होंने बहुत सारे दूध में जहर की कुछ बूंदे मिलाने का उदाहरण दिया।
- एक अभ्यासी ने स्पष्टीकरण माँगते हुये पूछा कि क्या अभ्यासियों के बच्चे 16 वर्ष की आयु में ध्यान शुरू कर सकते हैं। गुरुदेव ने उत्तर दिया कि हमें सही समय तक इंतजार करना चाहियें जैसे कि 18 वर्ष। उन्होंने एक खुश विवाहित जोड़े का उदाहरण देते हुए कहा कि यदि एक 12 वर्ष की आयु का बच्चा, किसी खुशी विवाहित जोड़े को देखकर, खुशी पाने के लिये तुरन्त शादी करना चाहता है तो इसकी अनुमति नही है। हर चीज का एक सही वक्त होता है।

18 तारीख की सुबह, गुरुदेव ने 7:30 बजे सतसंग कराया और 9 बजे रायचुर, कर्नाटक के लिये रवाना हुए। रास्ते में वह कुछ देर के लिये गड़वाल में रुके जहाँ अभ्यासी उनकी एक झलक पाने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वह लगभग ढाई घंटे की ड्राइव के बाद रायचुर पहुँचे। आखिरी एक घंटे की यात्रा बहुत ही ऊबड़–खाबड़ थी। सड़क पहले से ही बहुत संकरी थी और कुछ हफ्तों की बारिश से ज्यादा खराब हो गई थी।

रायचुर का आश्रम मिशन के प्रारम्भिक आश्रमों में से एक है। इसका उद्घाटन बाबुजी महाराज ने 1970 में किया था। गुरुदेव, इस आश्रम में 22 साल के बाद आये थे। उनके आगमन पर कर्नाटक से आये हुए करीब 1300 अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। गुरुदेव ने अपने कॉटेज की जगह का उद्घाटन किया जोकि ध्यानकक्ष की इमारत का ही एक हिस्सा है।

19 सितम्बर को सतसंग और नाश्ते के बाद 7:45 पर गुरुदेव अपनी 250 कि.मी. लम्बी यात्रा पर हैदराबाद के लिये रवाना हुए। सौ किलोमीटर की दूरी के बाद गुरुदेव महबूबनगर के एक गेस्ट हाउस में थोड़ा आराम करने के लिये रुके। लेकिन ऐसा मुमकिन नही था क्योंकि उनके विश्राम–स्थल पर सौ से भी अधिक अभ्यासी उनका इंतजार कर रहे थे। गुरुदेव ने कहा कि जब अभ्यासी उनका इंतजार कर रहे हों वह उनको समय देने के लिये कर्तव्य से बँधे हुए हैं। उन्होंने बाहर आकर सबको सीटिंग दी और स्थानीय प्रशिक्षक से केन्द्र के बारे में पूछताछ की और उन्हें थपकी देते हुए कहा कि वे खुश थे। उसके तुरन्त बाद उन्होंने यात्रा प्रारम्भ कर दी। दोपहर के भोजन के वास्ते लिये गये पड़ाव के पश्चात वह तुमकुन्टा के लिये निकल गये। सड़क मार्ग पर आठ घंटे से ज्यादा समय बिताने के बाद वे शाम को 4.20 बजे तुमकुन्टा पहुँचे। अभ्यासी उनके प्रेम भरे स्वागत के लिये मुख्य द्वार से उनके कॉटेज तक पंक्ति में शान्तिपूर्वक खड़े हुये थे। गुरुदेव काफी प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे, हालांकि वे चेन्नई से शुरू हुई इस सड़क–मार्ग की लम्बी यात्रा के कारण काफी थके हुए थे।

20 सितम्बर, रविवार को गुरुदेव सुबह 7:10 पर ही ध्यानकक्ष में आ गये। उन्होंने, प्रसन्नतापूर्वक, छः हजार लोगों से भरे इस विशाल ध्यानकक्ष को कुछ पलों तक देखा। कार्यक्रम स्थल पर भंडारे जैसा माहौल था। पूरे राज्य भर से व पड़ोसी राज्यों से भी लोग आये थे। ज्यादातर लोगों को कार्यक्रम–स्थल पर ही पाँच बड़े टेन्टों में ठहराया गया था। हर टेन्ट में आठ सौ लोगों के ठहरने की क्षमता थी। स्थल पर बच्चों सहित लगभग 7000 लोगों के होने का अनुमान था।

RAICHUR

MAHBOOBNAGAR

श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
मालिक का दौरा
नवम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ६

21 सितम्बर को भाई अजय ने प्रात: 7.30 बजे सत्संग करवाया। शाम को बहन सौम्या द्वारा प्रस्तुत भारतनाट्यम का कार्यक्रम था। गुरुदेव ध्यान कक्ष में एक घंटे तक चले इस कार्यक्रम में शामिल रहे, जिसमें माता यशोदा का अपने पुत्र भगवान कृष्ण के प्रति तड़प तथा प्रेम को दर्शाया गया था।

22 सितम्बर को प्रात: 10.30 बजे विदाई की घड़ी आई। अभ्यासी अनुशासित ढ़ंग से रास्ते पर कतार में खड़े हो गए और जब गुरुदेव के वाहनों का काफिला वहाँ से शहर की ओर गुजरा तो उन्होंने अपना सप्रेम आभार व्यक्त किया। रात में गुरुदेव, हवाई अड्डे से 30 मिनट की दूरी पर एक अभ्यासी के घर रुके। गुरुदेव ने शांतिपूर्वक और आराम के साथ समय बिताया और 23 सितम्बर की सुबह कोलकाता के लिए प्रस्थान किया।

इस प्रकार हमारे प्रिय गुरुदेव की आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और पुन: आंध्र प्रदेश की 10 दिन लम्बी सड़क–यात्रा सम्पन्न हुई। करुणा, प्रेम, वचनबद्धता तथा प्राथमिकता से भरे इस दौरे में उन्होंने अन्य सभी कार्यों को निबटाते हुए 10 प्रशिक्षक भी बनाये।

नांदयाल में एक दस वर्षीय बच्चे ने प्रेमपूर्वक उनसे पूछा कि क्या वे एक दिन और ठहर सकते हैं क्योंकि यह उनकी यहां पहली यात्रा है। तब गुरुदेव ने उसके सामने एक प्रश्न रखा,"वह क्या चीज है जो बूढ़े व्यक्ति के पास कम होती है और युवक के पास अधिक होती है?बच्चे ने कई उत्तर दिए। अंत में गुरुदेव ने बताया कि वह चीज 'समय' है। उन्होंने कहा, "तुम युवक हो, इसलिए तुम्हारे पास बहुत समय है। मैं बूढ़ा व्यक्ति हूँ इसलिए मुझे कम समय में बहुत सारा कार्य करना है। इसीलिए मुझे कर्नूल जाना होगा।" नि:संदेह तत्परता का यही भाव पूरी यात्रा में स्पष्ट दिखाई दिया।

कोलकाता

गुरुदेव 23 तारीख को यहाँ पहुँचे और सीधे आश्रम चले गए। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक की थकाने वाली सड़क यात्रा के बाद उन्होंने शेष दिन विश्राम किया। गुरुदेव ने 24 तारीख की शाम, 25 को सुबह और शाम के समय सत्संग कराया। 26 तारीख को सत्संग के बाद गुरुदेव ने करीब चालीस प्रतिभागियों के साथ प्रथम भारतीय छात्रवृति प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने प्रतिभागियों से ज्ञान की खोज और प्राप्ति के लिए जिज्ञासु प्रवृति विकसित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि बातों पर केवल दिमाग से नहीं बल्कि हृदय से ध्यान दें। (http://www.sahajmarg.org/literature/online/speeches/the-spirit-of-inquiry)

भाई बालासुब्रह्मण्यम ने 'सहजमार्ग के नियम' विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने ज्ञान अर्जित करने और गुरु प्राप्ति के संबंध में वेदों में क्या कहा गया है, उसके बारे में जानकारी दी।

कोलकाता

खड़गपुर

खड़गपुर

26 तारीख को शाम को गुरुदेव ने भाई अजय के घर के लिए प्रस्थान किया जहाँ से वह अगले दिन सुबह क्रेस्ट, खड़गपुर के लिए रवाना हुए। वे प्रात: 11.00 बजे तक वहाँ पहुँचे और थोड़ी देर कॉटेज में विश्राम करने के बाद उन्होंने पूरे परिसर का जायजा लिया। उन्होंने ध्यान कक्ष, कार्यालय की इमारत को देखा जिसमें पुस्तकालय, निर्देशक का आवास, ऑफिस तथा शिक्षक–कक्ष हैं। कार्य की गुणवत्ता से वह काफी खुश नजर आ रहे थे और उन्होंने रसोई घर का उद्घाटन किया और कैंटीन देखने के बाद अंतत: क्लासरूम पहुँचे जो उच्च तकनीकियों से सुसज्जित है। वह कुछ देर वहाँ बैठे और अनौपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "न्यूनतम ऊर्जा से अधिकतम परिणाम देना कुशलता है। ईश्वर की परिभाषा है कि शून्य निवेश में असीमित परिणाम और हमें इसे प्राप्त करने के लिये संघर्ष करना चाहिये।"

छात्रवृति कार्यक्रम प्रात: 5 बजे से रात लगभग 10 बजे तक अपनी व्यस्त समय–सारणी के साथ चलता रहा। इस कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर वार्ताए दी गई जैसे कि मिशन में सेवा, दस नियम तथा चरित्र निर्माण, धैर्य और दया, प्रसाद व प्रतीक–चिह्न, तीन–गुरुदेव, सहजमार्ग की जड़ें, नैतिकता तथा नीति, परिवर्तन, सतत स्मरण, एस.एम.एस.एफ, एस.एम.आर.टी.आई, एस.आर.सी.एम तथा एस.एच.पी.टी और केंद्र को सक्रिय बनाने और जनसभा के आयोजन पर भी जनकारी दी गई।

श्री राम चन्द्र मिशन

एकोज़ इंडिया

मालिक का दौरा

नवम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ६

एक शाम अभ्यासियों के साथ बैठे गुरुदेव से किसी ने पूछा कि इच्छाओं से कैसे बचें, तो उन्होंने कहा, "छोटी–छोटी चीजों से शुरुआत करें और फिर बड़ी इच्छाओं की ओर बढ़ें"।

२८ सितम्बर को गुरुदेव ने ध्यान कक्ष का फीता काटकर क्रेस्ट, खड़गपुर का औपचारिक उद्‌घाटन किया। सत्संग के बाद उन्होंने इस क्रेस्ट के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और केवल भगवद् गीता पर एक कार्यक्रम करवाने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हम सब प्रतिदिन गीता के एक अध्याय का अध्ययन करेंगे और उसमें निहित अर्थ को समझने का प्रयास करेंगे। बंगलौर से यह क्रेस्ट इस मायने में अलग होगा कि यहां 'नीति और नैतिकता' पर अधिक बल दिया जाएगा। (http://www.sahajmarg.org/literature/online/speeches/dare-to-think)

"तो मै चाहूँगा कि आप सभी, जो होना चाहिये, जो है और जो हो चुका है, उस यथार्थ की तुलना में अपने स्वयं की आस्था प्रणाली की जाँच करें और इस विषय पर साहस के साथ खुलकर चर्चा करने के लिये तैयार होकर आयें, इसी में इस संस्थान की सार्थकता है। इसी उद्देश्य के लिये इसका निर्माण किया गया है और इसका उपयोग इसी प्रकार किया जाना चाहिये।"
(क्रेस्ट, खड़गपुर)

उमस भरे मौसम और थकाऊ समय–सारणी के बावजूद भी गुरुदेव की उपस्थिति के कारण अगले दो दिन छात्रों में बहुत जोश था। ३० तारीख की शाम को उन्होंने अपनी समापन वार्ता में कहा, "एक संत के क्या–क्या गुण होते हैं? मुख्य गुण है– सम्पूर्ण संतुलन। दुख हो या सुख कोई फर्क नहीं। स्वस्थ हो या बीमार–कोई फर्क नहीं। अन्दर और बाहर–आप वहीं हैं –सम्पूर्ण संतुलन...। तो हमें याद रखना चाहिए कि ये अवसर प्रत्येक व्यक्ति को नसीब नहीं होते और न ही बार–बार आते हैं। आपको यह अवसर मेरे गुरुदेव की कृपा से मिला है। कोई शक्ति यहां लेकर आई है; प्रार्थना कीजिए कि वह आपको यहाँ बनाए रखे मेरा आशय आपके ज्ञान अर्जन और अभ्यास की निरंतरता से है: इस बात को याद रखते हुए कि यह ईश्वर की कृपा पर नहीं बल्कि आप पर निर्भर है।" (http://www.sahajmarg.org/literature/online/speeches/Only-Purpose-Of-Life)

अगली सुबह विद्यार्थियों तथा उपस्थित लोगों को प्रभात बेला में गुरुदेव के सानिध्य का अवसर मिला जब वह प्रातः ६.०० बजे के आसपास कॉफी पीने बाहर बैठे थे। उनके हास्य तथा किस्से कहानियों ने अभ्यासियों को करीब आधे घंटे तक मंत्र मुग्ध रखा। नाश्ते के बाद उनके कोलकाता के लिये प्रस्थान के साथ ही उनका खड़गपुर प्रवास सम्पन्न हुआ।

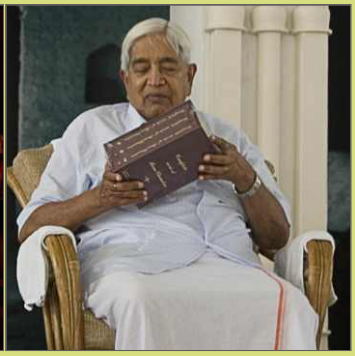

चेन्नई

२ तारीख को गुरुदेव कोलकाता से रवाना हुए और दोपहर २ बजे तक मणपाक्कम आश्रम, चेन्नई पहुँचे। इतनी लम्बी यात्रा के बाद, जिसमें कई स्थानों की सड़क–मार्ग यात्रा भी शामिल थी, गुरुदेव काफी थके हुए नजर आ रहे थे।

दिवाली की शुरुआत से पहले गुरुदेव ने मणपाक्कम में एक शान्त सप्ताह बिताया। रविवार ११ अक्टूबर से अभ्यासियों का तांता लगने लगा। गुरुदेव प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त थे लेकिन उन्होंने अपने दरवाजे पर जमा हो रहे अभ्यासियों से मिलने का समय निकाला।

शुक्रवार, १६ अक्टूबर को गुरुदेव ने बेकरी खंड (जिसका नाम रुचि बेकरी रखा गया है) का उद्‌घाटन किया। वह अपनी गोल्फ कार्ट से रसोईघर की तरफ गये जहाँ रास्ते के दोनों ओर सैंकड़ों अभ्यासी उनके दर्शन करने के लिये खड़े थे। उन्होंने ताजा बने हुए कुछ पकवानों को चखा और मौके पर कुछ बिक्री करके अधिकारिक तौर पर कार्य का शुभारंभ किया।

शनिवार, १७ अक्टूबर को रोशनी का त्योंहार 'दिवाली' था। गुरुदेव सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गए। प्रभात बेला से ही अभ्यासी, गुरुदेव से मिलने के लिए प्रतीक्षा करते दिखे। गुरुदेव ने धैर्यपूर्वक कई लोगों से मुलाकात की तथा त्योहार की बधाइयों का आदान–प्रदान किया।

गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित ५००० से अधिक अभ्यासियों को सुबह का सत्संग करवाया। उन्होंने कुछ नई पुस्तकों का विमोचन किया। गुजरात से आये अभ्यासियों ने शाम को गरबा नृत्य का आयोजन किया। गुरुदेव आधे घंटे के कार्यक्रम के दौरान बैठे रहे और कलाकारों को उनके नृत्य के लिए बधाई दी। रोशनी तथा दीयों से कॉटेज जगमगा उठा मानो परियों की कहानियों का दृश्य हो। वातावरण में त्योहार की बहार छाई थी और गुरुदेव को अपने बीच पाकर उनके सानिध्य में अभ्यासी फूले नहीं समा रहे थे।

श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
ज़ोनल गतिविधियाँ
नवम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ६

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम (ए. टी. पी.)

"यहाँ हमारा उद्देश्य आपकी उत्सुकता जगाना और उसे बढ़ावा देना नही है। बल्कि हमारा उद्देश्य वह हैं जिसे बाबुजी ने एनक्वायरी कहा है (जो 'I'' से शुरु होता है) – i-n-q-u-i-r-y – जिज्ञासा का भाव, किसी बात की गहराई में जाना, किसी बात की प्रकृति को पहचानना और जीवन शैली के पीछे छिपे दर्शन की जानकारी हासिल करना।"
पी. राजगोपालाचारी, कोलकाता, सितंबर 26, 2009

सहज मार्ग के नये अभ्यासियों के लिये पूरे भारत वर्ष में अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रम और ओपेन हाउस का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षक और दिग्गज अपने अनुभव और SMRTI की शैक्षिक सामग्री से नये अभ्यासियों का ज्ञानवर्धन करते हैं और उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

SMRTI के प्रथम स्तर के प्रारम्भिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य नये अभ्यासियों को साधना की बुनियादी और व्यवस्थित जानकारी प्रदान करना है। इन प्रस्तुतियों में, सहज मार्ग साधना के मुख्य पहलूओं पर विभिन्न सूत्रों से एकत्रित गुरुदेव की ओडियो और विडियो की झलकियां भी शामिल हैं। अगस्त, सितम्बर एवं अक्टूबर के महीनों में आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं की रिपोर्ट से हमें पूरे भारत में मिशन की गतिविधियों की रफ़्तार के बारे में पता चलता है।

6 सितंबर को आन्ध्र प्रदेश के काकीनाड़ा केन्द्र में ए. टी. पी. का आयोजन किया गया। इस ज़ोन में आयोजित किये जाने वाला अपनी तरह का यह पहला कार्यक्रम था। ज़ोन के SMRTI के संयोजक, भाई के. नागेश्वर राव ने इस कार्यक्रम का संचालन किया जिसमें 20 अभ्यासियों ने भाग लिया।

19–21 सितंबर को मध्य प्रदेश के ग्वालियर केन्द्र में लगभग 50 अभ्यासियों के लिए तीन दिन के ए. टी. पी का आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश के अलग–अलग केन्द्रों से आये शिक्षक सदस्यों ने विभिन्न विषयों पर वार्तायें दी जैसे प्रशिक्षण का उद्देश्य, आध्यात्मिकता की आवश्यकता, स्वयंसेवक कार्य और गुरुदेव के प्रति प्रेम। 'टू बी लाइक द मास्टर' और 'अवेकेन नाउ' शीर्षक की अंग्रेजी की दो डी वी डी चलाई गई। कार्यक्रम के अन्त में सभी अभ्यासियों ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा को ईमानदारी के साथ जारी रखने की प्रतिज्ञा ली।

केरल के ज़ोनल आश्रम आलुवा में रविवार, 11 अक्टूबर को मलयालम में 50 नये अभ्यासियों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सहज मार्ग अभ्यास के विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुति दी गयी। स्पष्टीकरण के लिए अलग सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। उनकें द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्न–ध्यान और सफ़ाई, स्मरण और सोचना, एवं मालिक और ईश्वर के बीच के अन्तर के बारे में थे। हाल ही में मालिक द्वारा चरित्र–निर्माण पर जोर देने की बात को, और क्यों यह हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है, इसके बारे में समझाया गया।

चित्तापुर

सेदम

ग्वालियर

कन्नड भाषा में सर्वप्रथम ए. टी. पी. का आयोजन 6 सितम्बर को कर्नाटक के मुलबागल केन्द्र में बंगलोर के भाई विश्वनाथ और बहन विजयलक्ष्मी ने किया। मालूर, कोळार और के. जी. एफ़. से आये करीब 50 अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। ज्यादातर प्रत्याशियों ने उत्साहपूर्वक वार्तालाप में भाग लेते हुए इस कार्यक्रम की सराहना की।

13 सितम्बर को उडीसा के राउरकेला शहर में आयोजित ए. टी पी. में 22 अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन के पहले एक प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया जिसमें प्रत्याशियों की साधना सम्बन्धी शंकाओं का निवारण किया गया।

11 अक्टूबर को उत्तर कर्नाटक के गुलबर्गा जिले के चित्तापुर केन्द्र में 20 अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भाई प्रहलाद पाक्निकर और भाई निजलिन्गप्पा ने कन्नड में अनुवादित संस्करण का प्रयोग करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया। सभी अभ्यासियों ने प्रस्तुतकर्ता द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते हुए कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

गुलबर्गा जिले के सेदम केन्द्र में 30 अगस्त को भाई निजलिंगप्पा द्वारा संचालित कार्यक्रम में 39 अभ्यासियों ने भाग लिया। सभी अभ्यासियों ने ध्यानपूर्वक सुनते हुए वक्ता द्वारा समय–समय पर उनकी मुस्तैदी को परखने के लिए पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया। कई प्रश्नों का स्पष्टीकरण भी दिया गया।

इन सभी केन्द्रों में समान रुप से महसूस किया गया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता ने सहज मार्ग अभ्यास के बारे में कोई दुविधा नही छोड़ी है। हालांकि यह कार्यक्रम नये अभ्यासियों के लिए था, पर यह उन अभ्यासियों के लिए भी अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ जो कुछ समय से अभ्यास कर रहे हैं। यह जरूरी हो जाता है कि अभ्यास की समझ को बेहतर बनाने और उसे तरोताजा करने के लिए हम बुनियादी बातों को ठीक प्रकार से समझें।

एच. पी. सी. प्रबंधन विकास सन्स्थान, पुणे

पुणे जिले के पिम्परी–चिंचवाड के अभ्यासियों ने हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन, निगड़ी के कर्मचारियों के लिए २८ सितंबर को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । भाई सक्सेना ने "सन्तुलित जीवन कैसे व्यतीत करें" विषय पर एक वार्ता दी । भाग लेने वाले ५० सदस्यों को सहज मार्ग अभ्यास पर एक प्रस्तुति देने के बाद उनके प्रश्नों के उत्तर दिये गये ।

सामूहिक अध्ययन समूह, इंदौर, एम.पी.

इन्दौर केन्द्र ने १३ सितम्बर को बाबूजी महाराज की पुस्तक 'शाश्वत संदेश' के सामूहिक अध्ययन का आयोजन किया जिसमें करीब ३५ अभ्यासियों ने भाग लिया । भाई तनवर ने पूज्य बाबूजी के संदेशों से सीखे अपने ज्ञान को औरो के साथ बाँटा । अभ्यासियों ने इस बात को भली भाँति समझा कि समर्पण ऐसी कोई चीज नही है जो हम बाह्य–रुप से करते है और न ही बाहरी आज़ापालन है बल्कि यह इच्छा–शक्ति का प्रयोग है । एक सन्देश में इस बात पर जोर दिया गया है कि हर अभ्यासी को मालिक द्वारा दिये गये उसके आन्तरिक विकास के अनुरुप अपना चरित्र निर्माण अवश्य करना चाहियें ।

सरायग्राम और विन्ध्या नगर, एम.पी.

११ सितम्बर को सरायग्राम में, जबलपुर के शिक्षक समुदाय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में ३० अभ्यासियों ने भाग लिया जिसमें सहज मार्ग अभ्यास की सारभूत विशेषताओं को ऑडियो–विडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया गया । बहन सुनीता शुक्ला ने ध्यान और सहज मार्ग के दस नियमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी । बहन अर्चना केस्कर ने प्रार्थना और डायरी लेखन पर जोर दिया और बहन कृष्णा पन्ड्या ने सफ़ाई और सतत स्मरण के बारे में बताया । इसके बाद भाई आर. के. व्यास ने प्रश्नोत्तर सत्र का कार्यभार सभाँला।

विन्ध्या नगर मे ५० अभ्यासियों ने 'सहज मार्ग–एक समीक्षा' सत्र मे भाग लिया जिसमें भाई नायकजी द्वारा प्रशिक्षित बच्चों ने मूल्यों पर आधारित एक प्रभावशाली प्रस्तुति प्रस्तुत की । शिक्षकगण ने अपने आपको धन्य महसूस किया क्योंकि वे कुछ सिखाने के लिये आये थे, पर उन्हें ऐसा लगा कि उन्होंने ही सबसे ज्यादा सीखा और अनुभव किया है ।

उत्तर महाराष्ट्र का दौरा

भाई वैद्या, भाई टिल्लू और भाई गिरीश ने कुछ अभ्यासियों के साथ १९ और २० सितंबर को गुजरात की सीमा से लगे उत्तर महाराष्ट्र के कुछ केन्द्रों का भ्रमण किया । उन्होंने सत्संग करवाया, स्थानीय दलो के साथ वार्तालाप किया, प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये और उनकी दुविधाओं और प्रश्नो के निवारण के लिये वार्तालाप सत्र का आयोजन किया ।

इस समुह ने नादुर्बार, जलगाँव, भुसावल का दौरा किया । इस पूरी यात्रा के दौरान, वे सतत स्मरण में रहें और उनके ह्रदय मालिक के प्रति प्रेम और आभार से भरे रहे । इस यात्रा ने इन केन्द्रों के अभ्यासियों में हर्ष और आनंद का माहौल पैदा कर दिया ।

भद्रावती में मिशन की पहली सालगिरह, कर्नाटक

शिमोगा जिले के भद्रावती केन्द्र ने ११ अक्टूबर को वहाँ पर मिशन की पहली सालगिरह मनाई । इस केन्द्र में एक वर्ष में ही अभ्यासियों की संख्या बढ़कर ४० से ज्यादा हो गई । यह स्थानीय अभ्यासियों के उत्साह, दूसरे केन्द्रों से आये प्रशिक्षकों के दौरों और सबसे महत्वपूर्ण, मालिक के आशीर्वाद के कारण सम्भव हो पाया है ।

सत्संग के बाद भाई सी. आर. एन. मूर्ति और भाई बी. एस. राव ने वार्ता दी । जोनल–इन–चार्ज भाई शरत हेगड़े ने अभ्यासियों को खुद पर काम करने और प्रणाली से लाभान्वित होने के लिए प्रेरित किया । स्थानीय अभ्यासियों ने अपने अनुभवों के बारे में बताया और साधना के विभिन्न पहलुओं के स्पष्टीकरण के लिये एक सत्र का आयोजन किया गया । दस नियमों पर बच्चों ने एक नाटिका प्रस्तुत की । भद्रावती के अभ्यासी–गण, जिन्होंने समारोह का प्रबंध किया था, यह सोच कर उल्लासित हो उठे कि वे भविष्य में मिशन के लिये क्या योगदान कर सकते है ।

वी बी एस ई की कार्यशाला, जयपुर

जयपुर आश्रम में २३ अगस्त २००९ को एक कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमे कुल १०० अभ्यासियों ने भाग लिया । SMRTI की प्रस्तुति में बच्चों के प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम में से उदाहरण लिये गये थे । शिक्षकों ने सफाई, ईमानदारी, सच बोलना, अनुशासन, सरल जीवन और उच्च विचार में आस्था, समय प्रबंधन आदि मूल्यों को भली–भाँति तस्वीरें और स्लाइड शो के माध्यम से समझाया ।

मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा प्रशिक्षण – एरनाकुलम, केरल

बच्चे इस विश्व का भविष्य हैं और उन्हें दिये गये मूल्यों पर काफी कुछ निर्भर करता है । 27 सितम्बर को एरनाकुलम केन्द्र में वी बी एस ई प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन और प्रस्तुतीकरण, SMRTI के क्षेत्र प्रभारी भाई ए. माधवन ने किया । 71 अभ्यासी और 13 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया । वार्तालाप के सत्र में सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । बच्चे, कुछ समय के लिये आँख बन्द करके मिशन की प्रार्थना के लिये बैठे । उन्हें मूल्यों पर आधारित अनेकों कहानियाँ सुनाई गयीं और फिर उनसे, उन कहानियों से ली गई सीख के बारे में पूछा गया । बच्चों के नवीन विचार अत्यन्त रोमांचित करने वाले थे । बच्चों के लिये वी बी एस ई की कक्षा के आयोजन हेतु स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिया गया । वी बी एस ई का प्रशिक्षण ज्ञान अर्जित करने हेतु नहीं बल्कि विवेक के विकास के लिये किया जाता है। बच्चों ने महसूस किया कि उन्हें भी मिशन के विकास के काम में लग जाना चाहिये ।

लखनऊ आश्रम में वृक्षारोपण

इस मानसून सत्र के समय लखनऊ आश्रम में लगभग 1000 से अधिक वृक्षों का लगाया ग़या और अभी लगभग 200 फल वाले वृक्षों को लगाने की योजना है । लखनऊ विकास प्राधिकरण ने इस कार्य में अपना हाथ मिलाते हुए 300 पौधे उपलब्ध कराये । 30 अगस्त 2009 को सुभाष पब्लिक स्कूल और राजहंस पब्लिक स्कूल से 250 विद्यार्थियों ने आश्रम में आकर इस कार्य में हाथ बँटाया ।

तिप्तूर में क्षेत्रिय जनसभा, कर्नाटक

10 और 11 अक्टूबर को 7 केन्द्रों (हसन, तुम्कूर, मधुगिरि, सी एन हल्ली, हुलियार, चिकमगलूर और तिप्तूर) से लगभग 120 अभ्यासियों ने तिप्तूर आश्रम में आयोजित दो दिन की गोष्ठी में भाग लिया, जिसका विषय था– 'स्वयं का पुनर्मूल्यांकन करें' ।

पहले दिन, मालिक के हाल ही में दिये गये सन्देशों और अभ्यासियों के समय–समय पर स्वयं का आंकलन किये जाने की आवश्यकता पर चर्चा हुई । शाम के सत्संग के बाद "सी आँफ लव" नाम की वी सी डी दिखाई गई और इसके बाद अभ्यासियों ने सहज मार्ग में हुए अपने अनुभवों को आपस में बाँटा ।

दूसरे दिन, 'सेवा का महत्व' और केन्द्रों में अच्छी टीम की आवश्यकता पर जोर दिया गया । प्रत्येक केन्द्र के लिये अगले एक साल के लिये एक कार्य योजना बनाई गयी, जिससे एक अच्छी मुख्य टीम का गठन किया जा सके । कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग से हुआ ।

सभी प्रत्याशियों को आश्रम में दो दिन बिताने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ । सभी ने समय–समय पर, इस तरह की क्षेत्रिय गोष्ठियों के आयोजन की आवश्यकता को महसूस किया, जो उन्हें अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद कर सकें ।

जीवन में ध्यान का महत्व, काशीपुर

10 सितम्बर को चन्द्रावती गर्ल्स डिग्री कालेज में 'जीवन में ध्यान का महत्व' विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें अध्यापक, बी एड और स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों सहित 110 प्रत्याशियों ने भाग लिया ।

भाई (डा.) आलोक टंडन ने इस विषय का परिचय देते हुए बहुत ही सरल शब्दों में जनसामान्य में ध्यान की संकल्पना और ध्यान में अन्तर विशद किया।। भाई आर. पी. उमाशंकर सेक्रेटरी, एस. आर. सी. एम., ने श्रोताओं को रोमांचित करते हुए सांसारिक लाभों के लिये किए गए ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति के लिये किए गए ध्यान के बीच का अन्तर बताया।

उन्होंने विद्यार्थियों से समय के उपयोग पर ध्यान देने के लिए कहा कि वे दिन भर में, समय को व्यर्थ करने की तुलना में समय का कितना सदुपयोग करते हैं । उन्होंने परिहास पूर्वक एक उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार एक–दूसरे की आलोचना करने में व्यर्थ किये गये समय का हम ध्यान करके सदुपयोग कर सकते हैं । वहाँ पर एक प्रश्नोत्तर सत्र भी था और उसके बाद भाई आलोक ने सहज मार्ग के बारे में एक संक्षिप्त विवरण दिया । इच्छुक प्रत्याशियों को पुस्तकें और पत्रिकाएं दी गयीं और उन्हें पद्धति को भली–भाँति समझने के लिये वहाँ के क्षेत्रिय प्रशिक्षकों से मिलने के लिये प्रोत्साहित किया गया ।

अग्रिम युवा संगोष्ठी, बंगलोर

2 से 4अक्टूबर तक

इस संगोष्ठी का आयोजन उन युवाओं के लिये था जो सहज मार्ग में काफी साल व्यतीत कर चुके हैं और अपनी प्रेरणा को कायम रखने के लिये कुछ अधिक की तलाश में थे। प्रत्याशियों (20 से 35 उम्र) का चयन दक्षिण कर्नाटक ज़ोन के अनेक केन्द्रों के केन्द्र प्रभारी / प्रशिक्षक प्रभारी द्वारा किया गया। ज्यादातर प्रत्याशी, मिशन में 3 साल से ज्यादा समय से अभ्यास कर रहे थे।

औपचारिक सत्र शुरू होने से पहले, दिन की शुरुआत सुबह साढ़े चार बजे ध्यान, व्यायाम/योग व सतसंग से हुई। सुबह दो औपचारिक सत्रों के बाद खेल और दो घंटे का स्वयंसेवी कार्य का कार्यक्रम था। इस सत्र के द्वारा प्रत्याशियों को गुरुदेव, मिशन व पद्धति के विभिन्न पहलुओं के गहन सार को मनन करने का अवसर मिला। उन्हें समूहों में विचारों के आदान–प्रदान, अपने अनुभव व दृष्टिकोण को बाँटने का भी मौका दिया गया। अनेकों विषयों में निम्न विषय भी शामिल थे 'एक गुरुदेव, एक मिशन और एक पद्धति', 'योग्य बनने के लिये सेवा करें', 'आज्ञाकारिता, आध्यात्मिकता का आधार है', 'आन्तरिक दुनिया की खोज', आध्यात्मिकता, बिना चरित्र के मृगतृष्णा है, व ' सहज मार्ग और कल का विश्व'। प्रत्याशियों में प्यार व भाईचारे की भावना मजबूत होती दिखाई दे रही थी।

सहभागियों ने इसी तरह के कार्यक्रमों को अपने केन्द्रों में शुरु करने की इच्छा ज़ाहिर की। सहयोगियों और प्रत्याशियों के बीच एक खुलापन था और वे अपनी राय एक दूसरे के साथ बाँट रहे थे तथा अपने अन्दर से ही जबाबों के मिलने से खुश हो रहे थे।

उत्तराखण्ड में प्रशिक्षक संगोष्ठी

20 और 21 सितम्बर को सतखोल आश्रम में आयोजित उत्तराखण्ड ज़ोन के 41 प्रशिक्षकों ने 2 दिन की बैठक में भाग लिया जिसका विषय था 'गुणों और संख्या को बढ़ाना'।

पहले दिन ज़ोन प्रभारी, भाई चुफाल ने गतिविधियों का सम्पूर्ण बयोरा दिया। तब उन्होंने प्रत्येक केन्द्र में, जहाँ सुधार किया जा सकता है, उसके बारे में बताते हुए प्रत्येक पर एक रिपोर्ट दी। तथ्यों को प्रशिक्षक की रिपोर्ट व सदस्यता के डेटाबेस से लिया गया था। उन्होंने ध्यानकक्ष व आश्रमों के रख–रखाव, और किसी केन्द्र में गुरुदेव के दौरे पर एक सामान्य आदर्श ढ़ाँचे को अपनाने की बात कही। SMRTI के ए टी पी कार्यक्रम के प्रथम स्तर को सभी प्रशिक्षकों को प्रस्तुत किया गया।

शाम को भाई आलोक ने केन्द्र की विभिन्न गतिविधियों, और उत्तम तरीकों के बारे में काशीपुर का उदाहरण देते हुए एक प्रस्तुति दी। उसके बाद उन्हें जनसभायें व पूर्णदिवसीय कार्यक्रमों के आयोजन पर भी जानकारी दी गई।

दूसरे दिन की शुरुआत 'इन्टरनेट के द्वारा संचारण' विषय पर प्रत्यक्ष प्रदर्शन से हुई। मिशन की वेबसाइट पर विभिन्न अनुभागों में कैसे विचरण किया

जाये, उसे दिखाया गया। इसके बाद सुरक्षा के पहलुओं पर तैयार की गई भाई दुरै की एक प्रस्तुति को दिखाया और समझाया गया।

अभ्यासियों की संख्या व गुणवत्ता में सुधार– इस विषय पर एक सामूहिक वार्तालाप और प्रस्तुति का आयोजन किया गया। गुरुदेव की हाल ही में तिरुपुर में प्रशिक्षकों को दी गई वार्ता के मुख्य अंशों को प्रस्तुत किया गया। उसके बाद गुरुदेव की चित्तूर में दी गई वार्ता का हिन्दी अनुवाद पढ़ा गया।

यह निष्कर्ष निकाला गया कि संख्या बढ़ाने के लिये प्रशिक्षकों को 'और ज्यादा काम' करना होगा तथा गुणवत्ता को बढ़ाने के लिये उन्हें काम को दिल लगाकर करना होगा। शाम के सतसंग के साथ ही अतीत के चिन्तन व शिक्षण के सत्र का समापन हुआ।

जाग्गमपेट, आंध्र प्रदेश में जनसभा

जाग्गमपेट, आन्ध्र प्रदेश के 'सी' ज़ोन में, काकीनाड़ा से 35 किलोमीटर की दूरी पर एक ओद्योगिक शहर जैसा, करीब पाँच लाख लोगों की आबादी वाला एक गाँव हैं। लघु उद्योग जैसे चावल की मिल व छत के टायल्स का उत्पादन यहाँ की मुख्य गतिविधियां हैं।

2006 में यहाँ के उपकेन्द्र ने अपनी गतिविधियों की शुरुआत मुट्ठी भर अभ्यासियों को ध्यान प्रारम्भ कराने के साथ की थी। बाद में अभ्यास की पद्धति व सादगी से प्रेरित होकर, वहाँ की संख्या चालीस नियमित अभ्यासियों तक बढ़ गई। स्थानीय जिज्ञासुओं के जिज्ञासा से प्रेरित होकर भाई पी. सुब्रमण्यम ने 14 सितम्बर, 2009 की शाम को एक जनसभा का आयोजन किया जिसमें सभी उम्र के करीब दो सौ लोगों ने भाग लिया।

अनेक विषयों पर चर्चा हुई जैसे – धर्म में ईश्वर को स्वयं से बाहर बताया जाना, अध्यात्मिकता में ईश्वर को स्वयं के अन्दर माना जाना तथा अध्यात्मिकता की आवश्यकता। सभा का समापन एक जोरदार सिफारिश के साथ हुआ कि आध्यात्मिकता एक वैकल्पिक विषय नही है अपितु एक अनिवार्य विषय है तथा सहज मार्ग साधना, हर हालात में व्यक्ति में सामन्जस्यता बनाये हुए उसे मानव सम्पूर्णता की तरफ ले जा सकती है।

भाई के. यदुसुर्या और बहन के. ज्योति ने विषय पर वार्ता दी जबकि भाई डी. भास्कर राव और वी. वेन्कट राव ने सहज मार्ग शुरु करने के बाद अपने अन्दर आये बदलाव के बारे में बताया।

कोयम्बतूर केन्द्र–नवीन रूप में पूर्ण दिवस कार्यक्रम

कोयम्बतूर केन्द्र ने रविवार के पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम को, हर रविवार के बजाय पहले की तरह ही महीने के पहले रविवार को करने का निर्णय लिया। जिसकी वजह से, हर सप्ताह एक छोटे से समर्पित समूह के भाग लेने की बजाय ज्यादातर अभ्यासी भाग ले पाते हैं। इसकी योजना बहुत ही सोच समझ कर बनाई गई है जिसमें विषयों का चयन नये व पुराने अभ्यासियों की रुचि को ध्यान में रखकर किया गया है।

हर सप्ताह बाबूजी महाराज की किसी एक पुस्तक में से कुछ महत्वपूर्ण अंशों को समझने का प्रयास किया जाता है, जिससे हमारी आध्यात्मिक उन्नति में सहायता मिलती है। अब तक तीन पुस्तकें 'सत्य का उदय', 'सहज मार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्य दर्शन' और 'सहज मार्ग के दस नियमों की व्याख्या' पूरी की जा चुकी हैं। आने वाले महीनों में बाबूजी की अन्य पुस्तकें ली जायेंगी। यह कार्यक्रम स्वंयसेवकों, वक्ताओं, शिक्षकों इत्यादि के लिये उपयोगी होने के साथ–साथ अभ्यासियों को भी बाबूजी महाराज की पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा देता है।

सहज मार्ग प्रश्नोत्तरी, इस कार्यक्रम का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसमें साधना, मिशन के इतिहास और मालिकों के जीवन इत्यादि से प्रश्नों को पूछा जाता है।

'विसपर्स फ्रोम द ब्राइटर वर्ल्ड' को पढ़ने के महत्व पर भी एक सत्र का अयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में सहज मार्ग की महत्वपूर्ण सूक्तियों पर जैसे 'मालिक को भेड़ नहीं, शेर चाहिये', के बारे में सामूहिक चर्चा की जाती है, जिसके बाद गुरुदेव के साहित्य से, उसके बारे में जो कहा गया है, उसे पढ़ा जाता है।

उत्तर–कर्नाटक में जनसभा सत्र

बसवकल्याण केन्द्र (बीदर जिला) के बसवेश्वर इंग्लिश मीडियम स्कूल में 1 अक्टूबर को एक जनसभा सत्र का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्या श्रीमती निर्मला शेटगर सहित हाई स्कूल के 30 शिक्षकों ने जनसभा में हिस्सा लिया। भाई श्रीकांत जोशी ने हिंदी में 'हमारे जीवन में आध्यात्मिकता की अनिवार्यता' पर भाषण दिया। भाई मल्लिकार्जुन उप्पिन ने 'मालिक, मिशन और पद्धति' पर भाषण दिया। दोनों भाषणों की सराहना की गई। जिज्ञासुओं को पैम्पलेट बाँटे गये।

गुलबर्गा जिले के चित्तापुर केन्द्र में 30 लोगों के लिये 11 अक्टूबर को एक जनसभा का आयोजन किया गया। भाई देवेन्द्रप्पा ने आगन्तुकों का स्वागत किया। भाई गजेन्द्र सिंह ने हिंदी में 'आध्यात्मिकता की आवश्यकता' पर एक वार्ता दी। भाई राजू काशमपुर्कर ने 'मालिक, मिशन और पद्धति' पर कन्नड़ में भाषण दिया।

13 अक्टूबर को 30 रेलवे कर्मचारी, गुलबर्गा रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के ऑफिस में एकत्रित हुये। भाई गजेन्द्र सिंह ने 'आध्यात्मिकता और सहज मार्ग' पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया। भाई श्रीकांत जोशी ने सहज मार्ग और हमारे मिशन के बारे में बताया। भाई महेश देशपांडे ने सहज मार्ग के गुरुओं के वंशानुक्रम के बारे में बताया और कार्यक्रम का समापन किया।

नये प्रकाशन

'रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ' का पुनः प्रकाशन। तीन भागों का यह विशेष संस्करण एक बाक्स के रूप में जारी किया गया है।

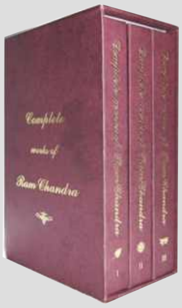

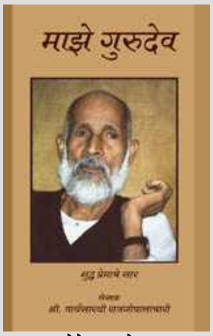

मेरे गुरुदेव
मराठी

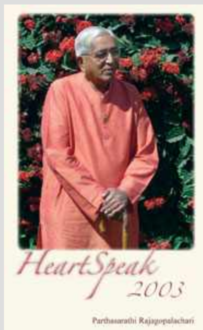

हार्ट स्पीक 2003
अंग्रेज़ी

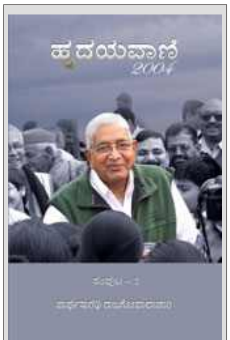

हार्ट स्पीक 2004
भाग – 2, कन्नड

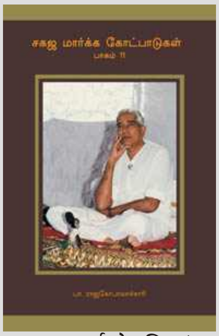

सहज मार्ग के सिद्धांत
भाग 11
(तमिल)

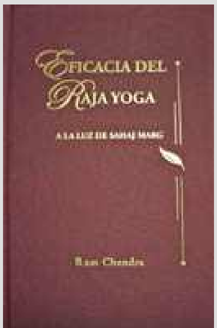

सहज मार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्य दर्शन
(स्पेनिश)

सहज मार्ग के दस नियमों की व्याख्या
(विशेष संस्करण)

सत्य का उदय
(विशेष संस्करण हार्ड बाउन्ड)

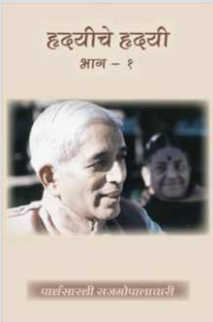

दिल से दिल की बात–
भाग 1
(मराठी)

श्री राम चन्द्र मिशन

एकोज़ इंडिया

प्रकाश के केन्द्र

नवम्बर २००९ | केवल निजी वितरण के लिये | भाग २,अंक ६

बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मुबंई

भारत की वाणिज्य राजधानी मुबंई में बाबूजी मेमोरियल आश्रम का उद्‌घाटन पूज्य गुरुदेव द्वारा 6 फ़रवरी, 2004 को बसंत पंचमी के दिन किया गया था। यह आश्रम सामान्यत: पनवेल आश्रम के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यह पनवेल शहर (रायगढ़ जिला, महाराष्ट्र) में स्थित है। पनवेल, मुबंई शहर से 22 किलोमीटर की दूरी पर, मुबंई–पुणे एक्सप्रेसवे पर स्थित है। पनवेल आश्रम 0.75 एकड़ में फैला हुआ है। यह चंगु काना ठाकुर हाई स्कूल के ठीक सामने है और पनवेल रेलवे स्टेशन से पैदल का रास्ता है।

मुंबई में आश्रम बनाने के लिये सबसे बड़ी चुनौती भूसंपत्ति की ऊंची कीमतें थी। परंतु यह अभ्यासियों के अथक परिश्रम और मालिक के प्रोत्साहन और दृढ़ता का ही परिणाम है कि आज यह आश्रम, वहाँ पर खड़ा अपनी छटा चारों ओर बिखेर रहा है।

मालिक ने पनवेल रेलवे स्टेशन के पास 24 जनवरी, 1999 को जमीन को लेने का निर्णय किया। इस भूमि पर उनके द्वारा कराये गये सतसंग के बाद जब मालिक ने इस जमीन पर आश्रम बनाने की घोषणा की तो अभ्यासियों ने असीम तृप्ति का अनुभव किया। मालिक ने आश्रम का नाम बाबूजी मेमोरियल आश्रम (बी.एम.ए) रखा जो कि भारत में निर्मित 5 बी. एम. ए में से एक होगा।

आश्रम का निर्माण उन अभ्यासियों के अथक परिश्रम से ड़ेढ वर्षो में पूरा हो गया जो मालिक की सेवा का सुनहरा अवसर पाकर धन्य हो गये थे। 6 फ़रवरी, 2004 को मालिक ने आश्रम का उद्‌घाटन किया।

आश्रम की इमारत दो मंजिल में बनी हुई है। जमीनी स्तर पर मालिक का कॉटेज, रसोई, भोजन कक्ष और महिलाओं का निवास–गृह (डार्मिटरी) है। पहली मंजिल पर पुरुषों का निवास–गृह और अभ्यासियों को आवंटित कमरे है। ध्यानकक्ष दूसरी मंजिल पर स्थित है। CIDCO द्वारा 1 एकड़ की जमीन, मिशन को 'ग्रीन ज़ोन' के विकास और रख–रखाव के लिये दी गयी है। मालिक ने हाल ही में आश्रम के विस्तार को मंजूरी दी है। इस विस्तार के तहत दूसरी मंजिल पर कुछ नये कमरे और ध्यानकक्ष के करीब मालिक का एक नया कॉटेज शामिल है।

मुबंई और उसके पास के इलाकों में अधिकतर अभ्यासियों का दैनिक जीवन काफी व्यस्त और बैचेनी भरा है। स्थानीय अभ्यासियों के लिये यह आश्रम, दैनिक जीवन की चिन्ताओं व तनाव को भूलने और मालिक द्वारा रचित अलौकिक वातावरण का आनंद उठाने का एकमात्र स्थान है। इसलिये, वे यथासंभव यहाँ पर आने का प्रयास करते हैं।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.